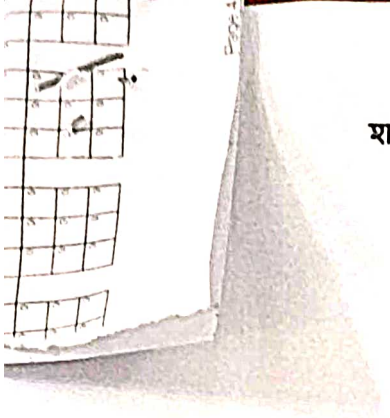

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

(स्नातक स्तर)

Course Outcome // B A vi Semester

अस्मिता मूलक विमर्श

CO 1 दलित विमर्श : वर्णाश्रम-व्यवस्था और हाशिए के समाज का इतिहास

CO 2 वर्णाश्रमवाद विरोधी निर्गुण काव्य का दलित साहित्य की पूर्व-परंपरा के रूप में अध्ययन ।

CO 3 समकालीन दलित साहित्य का उद्भव और विकास

CO 4 कविता/कथा/ आत्मकथा लेखन में दलित जीवन का सामाजिक यथार्थ

CO 5 साहित्य में दलित अनुभव की सक्रिय चेतना

CO 6 दलित आलोचना के तीखे प्रश्न । मुख्यधारा के साहित्य और चिंतन पर पुनर्विचार का प्रस्ताव

CO 7 आलोचना और चिंतन में दलित / अंबेडरवादी दृष्टिकोण का सूत्रपात

CO 8 आदिवासी विमर्श : प्रकृति और मनुष्य का सहसंबंध

CO 9 जल जंगल जमीन के प्रश्नों की साहित्य के इलाके में पैठ

CO 10 प्रकृति के संसाधनों के बचाव और रचाव की सृजनात्मकता

CO 11 संसाधनों के न्यूनतम उपयोग (मिनिमलिज़्म) का विचार

C O 12 सहअस्तित्व / समता / सामूहिकता / सहभागिता और सामंजस्यपूर्ण जीवनदर्शन की अभिव्यक्ति

C O 13 रंग / नस्ल / लिंग के आग्रहों से मुक्त ' प्रकृति की संतान ' की अवधारणा का परिपालन

C O 14. जैव एवम् वानस्पतिक विविधताओं के साथ-साथ साहित्य के इलाके में भाषाई और सांस्कृतिक विविधताओं का संरक्षण

C O. 15. स्त्रीविमर्श : स्त्री विमर्श का वैश्विक स्वरूप

C O 16 सत्रीसंघर्ष का भारतीय अध्याय

CO 17 लैंगिक असमानता की प्रकृति और उसके सामाजिक-आर्थिक पहलू की समझ

CO 18 राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में स्त्री सशक्तिकरण के प्रयास एवम् प्रभाव ।

CO 19 सेवा क्षेत्र में समानवेतन का अधिकार, मातृत्व अवकाश का अधिकार, यौन उत्पीड़न और लैंगिक भेदभाव के प्रश्न

CO 20 स्त्री आंदोलन की अवधारणाएँ

CO 21 इको-फ़ेमिनिज़्म : स्त्री और प्रकृति ; दोनों के संकट की समानभूमि पर चिंता

C O 22 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और भारतीय स्त्री के लिए घर, परिवार, रीति रिवाज और संस्कृति के मायने ।

CO 23 स्त्री शोषण : वंचना और विलास के दो छोर

CO 24 स्त्रीविमर्श का साहित्य : कविता / कथा / आत्मकथा / कहानी/ उपन्यास और स्त्री आलोचना विधाओं का रूप और सौंदर्य

C O 25 स्त्री अस्मिता को केंद्र में रखकर विश्व के इतिहास, समाज, साहित्य, राजनीतिक प्रणाली तथा दर्शन और चिंतन की अवधारणाओं के पितृसत्तात्मक सार्वभौम की जाँच-पड़ताल और विश्लेषण ।

धीरेन्द्र नाथ तिवारी हिन्दी विभाग प्रभारी

(D. N. Tiwari)

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग PSO

Programme Specific Outcome

(स्नातक एवम स्नातकोत्तर स्तर)

PSO 1 समाज और साहित्य के अंतर्संबंध की समझ

PSO 2 समकालीन मनुष्यों की जीवनस्थितियों से साक्षात्कार और सामाजिक यथार्थ के विविध रूपों से परिचय

PSO. 3 आदिकालीन / मध्यकालीन / आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियों के अध्ययन से मानवीय चेतना और विचारों की गतिशीलता का अध्ययन संभव ।

PSO. 4 मनुष्य के हृदय और विवेक की अंतर्संगति का उद्घाटन

PSO. 5 भाषा और व्याकरण के सम्यक ज्ञान से अन्य ज्ञानानुशासनों में अच्छी गति होना ।

PSO. 6 सांस्कृतिक वैविध्य का भान और लोकभाषाओं के सौंदर्य का अनुभवन

PSO. 7 स्वाधीनता संग्राम में साहित्य और पत्रकारिता का योगदान

PSO. 8 समकालीन संकटग्रस्त मनुष्यता के प्रति साहित्य और आलोचना की प्रासंगिकता और उसके उत्तरदायित्व का सतत अन्वेषण ।

PSO. 9 साहित्य की सूक्ष्म वैचारिक दृष्टियों के संघर्ष से नई मनुष्यता ओर नए समाज के निर्माण की प्रक्रिया ।

PSO. 10 साहित्य और चिंतन की सृजनात्मक, कलात्मक सौंदर्यात्मक और ज्ञानात्मक भूमि का उत्खनन

PSO 11 उच्च स्तरीय साहित्य के अध्ययन से विश्ववंधुत्व और मानवतावादी विश्वदृष्टि का उन्मेष ।

PSO 12 रस, छंद अलंकार के अध्ययन से काव्य के रूप और सौंदर्य का आस्वादन ।

धीरेन्द्र नाथ तिवारी हिन्दी विभाग प्रभारी

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(D. N. Tiwari)

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwa
Dehradun (Uttarakhand)

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग PO

Programme Outcome

(स्नातक एवम स्नातकोत्तर स्तर)

PO. 1 साहित्य के सामाजिक सरोकारों की खोज

PO. 2 समतामूलक और शोषणविहीन समाज के निर्माण में साहित्य की भूमिका की समझ

PO. 3 इहलौकिकतावादी / लोकतांत्रिक / धर्मनिरपेक्ष / वैज्ञानिक चेतना से युक्त समाज के निर्माण के लिए रचनात्मक प्रयास

PO. 4 निम्न वर्ग / निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ से परिचय । और उस यथार्थ को बदलने की सृजनात्मक पहल ।

PO. 5 सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना से संपन्न काव्य एवम् कथा साहित्य का अध्ययन अनुशीलन

PO. 6 स्त्री / दलित / आदिवासी प्रश्नों के प्रति संवेदनशीलता । इनके शोषण के विविध रूपों और उसके कारणों का अध्ययन । साथ ही जाति, धर्म, लिंग, भाषा और नस्ल की संकीर्णताओं से बाहर निकलने का प्रयास ।

PO. 7 पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता और मर्यादित विकास की दृष्टि का उन्मेष ।

PO. 8 आशावादी, भविष्यदर्शी और मनुष्यता की मुक्ति में विश्वास दिलाने वाले साहित्य का पठन पाठन और सृजन ।

PO. 9 इतिहास के मानवतावादी स्वरूप को साहित्य के माध्यम से समझना ।

PO. 10 निर्गुण और सूफ़ीकाव्य की समकालीन प्रासंगिकता का अनुसंधान करना । सामाजिक-सद्भाव और सामाजिक-न्याय के विचार का प्रसार ।

PO. 11 'आधुनिक' के प्रत्यय और आधुनिकता और जनतंत्र के विचार का अध्ययन करते हुए स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए साहित्य और कलाओं के उत्तरदायित्व की पहचान ।

PO 12 राष्ट्रीय चेतना का साहित्य / छायावादी काव्य / निराला के काव्य की स्वाधीन चेतना / प्रेमचंद का आदर्शवादी यथार्थ वाद / सामाजिक यथार्थवाद / अतियथार्थवाद / प्रगतिवाद / प्रयोगवाद / नई कविता, नई कहानी / समकालीन साहित्य आदि विविध प्रकार के साहित्यांदोलनों का अध्ययन अनुशीलन, विश्लेषण और आलोचना करते हुई वर्तमान साहित्यिक वातावरण को नई दृष्टि और समझ प्रदान करिए ।

P O 13 अनुवाद के महत्व को समझना । नाना ज्ञानानुशासनों में उपलब्ध विश्व की अथाह ज्ञानसंपदा को हिंदी भाषा में ले आने का प्रयास । अनुवाद और आजीविका का गहरा संबंध ।

P O 14 राजभाषा के रूप में हिंदी को और अधिक समर्थ बनाने हेतु कामकाजी हिंदी / प्रयोजन मूलक हिंदी का विधिवत अध्ययन

PO 15 हिंदी भाषा में मीडिया लेखन / पत्रकारिता / सिनेमा और धारावाहिकों के लिए स्क्रिप्ट लेखन ।

PO 16 हिंदी में समाचार संग्रह / लेखन और समाचार वाचन और वस्तुओं तथा सेवाओं के विज्ञापन का कार्य

(D. N. Tiwari)

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun,

PO 17 प्रशासनिक / विधिकार्य संबंधित हिंदी के ज्ञान और हिंदी भाषा में कम्प्यूटर के कार्य में समर्थ होने से आजीविका और सामाजिक सहयोग के नए आयाम खुलते हैं ।

P O 18 हिंदी भाषी क्षेत्र एक बड़ा बाज़ार क्षेत्र भी है ; अत: अनुवाद, आशुअनुवाद और दुभाषिया कर्म से आजीविका के बहुत से अवसर है साथ ही वस्तुओं तथा सेवाओं के विज्ञापन का कार्य भी हैं ।

P O 19 हिंदी को अंतरराज्यीय संपर्क भाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित और समर्थ करने की दिशा में तथा आजीविका के एक बड़े क्षेत्र के रूप में हिंदी शिक्षण. अध्यापन का महत्व ।

P O 20 उच्चस्तर की प्रशासनिक सेवाओं तथा अधीनस्थ सेवाओं में हिंदी व्याकरण / राजभाषा / हिंदी में सरकारी गैरसरकारी पत्रलेखन / देवनागरी लिपि से संबंधित प्रश्नों का हल आसानी से करेंगे ।

PO 21 साहित्यांदोलनों के अध्ययन से तत्कालीन इतिहास के अध्ययन की दृष्टि विकसित करना

PO 22 कहानी-उपन्यास / रेखाचित्र.संस्मरण.यात्रावृत्तांत / नाटक.एकांकी / जीवनी-आत्मकथा के तुलनात्मक अध्ययन से विधाओं के अंतर्संबंधों और भिन्नताओं का ज्ञान

धीरेन्द्र नाथ तिवारी हिन्दी विभाग प्रभारी

Preetpal Singh
-ordinator, NAAC
. Govt. P.G. College,
wala, Dehradun.

(D. N. Tiwari)

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

एम ए 2 सेमेस्टर : प्रश्न पत्र 8

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

Course outcome

CO 1 पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पृष्ठभूमि : यूनानी सभ्यता के अध्ययन की अपरिहार्यता

CO. 2 प्लेटो : काव्य / कलाएँ अनुकरण का अनुकरण हैं / प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत में अनुकरण का अपकर्षी अर्थ / काव्य भाव को उद्दीप्त करता है तर्क को नहीं / दुखांत काव्य मनुष्य निर्बत बनाता है / काव्य और दर्शन में शाश्वत विरोध का विचार / आदर्श राज्य की अवधारणा में काव्य को सम्मानजनक स्थान नहीं / शूरवीर, तर्कवादी और सत्यनिष्ठ व्यक्ति की ज़रुरत / काव्य के प्रति अनुदार रवैय्या / काव्य के आंतरिक गुणों को दोष गिनना / कवि को ज्ञानशून्य, आत्मविस्मृत, उन्मत्त, आविष्ट व्यक्ति समझना ...

CO. 3 अरस्तू : अनुकरण सिद्धांत :
त्रासदी : । विरेचन : अरस्तू के अनुसार अनुकरण में तीन प्रकार की वस्तुओं में से कोई एक हो सकती है- जैसे वे थीं या है ---यथार्थ ---जैसी वे कही या समझी जाती हैं कल्पित यथार्थ---और जैसे वे होनी चाहिए ---सम्भाव्य यथार्थ। इन्हीं को क्रमशः प्रतीयमान, सम्भाव्य और आदर्श रूप माना गया है।

C O 4 अरस्तू के अनुकरण का अर्थ बूचर ने इस प्रकार बताया है- सादृश्य विधान अथवा मूल का पुनरुत्पादन, सांकेतिक उल्लेखन नहीं।" कोई भी कलाकृति मूल वस्तु का पुनरुत्पादन जैसी वह होती है। वैसे नहीं अपितु जैसी वह इन्द्रियों को प्रतीत होती है वैसा करती है। कलाकृति, इन्द्रिय-बोध सापेक्ष पुनः सृजन है, यथातथ्य अनुकरण नहीं।

CO 5 विरेचन सिद्धांत : दूषित विचारों का निष्काषन और शुद्धि । विरेचन/ कैथार्सिस द्वारा अरस्तु ने प्रतिपादित किया कि कला और साहित्य के द्वारा हमारे दूषित मनोविकारों का उचित रूप से विरेचन हो जाता है। सफल त्रासदी विरेचन द्वारा करुणा और त्रास के भावों को उद्बुद करती है, उनका सामंजन करती है और इस प्रकार आनंद की भूमिका प्रस्तुत करती है।

CO. 6 लौंजाइनस : वह पहले स्वचछंदतावादी आलोचक कहे गये हैं । वे उदात्त को महान आत्मा की प्रतिध्वनि मानते हैं । उदात्त तत्व के विवेचन में वे पाँच तत्वों को आवश्यक ठहराया है। 1. विचार की महत्ता 2. भाव की तीव्रता 3. अलंकार का समुचित प्रयोग 4. उत्कृष्ट भाषा 5. रचना की गरिमा। इनमें से प्रथम दो जन्मजात तथा शेष तीन कलागत के

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

अंतर्गत आते है वे अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कर्ष को ही औदात्य मानते हैं। वह कहते है कि उदात्त अभिव्यंजना का अनिर्वचनीय प्रकर्ष और वैशिष्ट्य है।

CO. 7 वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा सिद्धांत : वह रीतिबद्धता को अस्वाभाविक मानते हैं और दांते के विपरीत वे मानते हैं कि काव्य में ग्रामीणों की दैनिक भाषा का प्रयोग होना चाहिए। ग्रामीण जीवन में मनुष्य के भाव सरल निष्कपट सच्चे होते है तथा प्रकृति के निरंतर सम्पर्क से विकसित होते हैं इसलिए उनमें तादात्म्य सुगम होता है। गद्य और पद्य की भाषा में तात्विक भेद नहीं होता।

वर्ड्सवर्थ के अनुसार प्राचीन कवियों का भावाबोध जितना सरल था, उनकी भाषा उतनी ही सहज थी। भाषिक कृत्रिमता और आडंबर बाद के कवियों की देन है।

वर्ड्सवर्थ ने काव्यभाषा-सिद्धान्त के विषय में अपना एक निश्चित मत प्रस्तुत किया है। उसने माना है कि कविता की भाषा जन-साधारण से जुड़ी --ग्रामीण भाषा-- हुई होनी चाहिए।

CO. 8 कॉलरिज : कल्पना सिद्धांत : कॉलरिज कल्पना को संपूर्ण मानवज्ञान की सजीव शक्ति तथा प्रमुख साधन मानते हैं ; साथ ही उसे ससीम मन में असीम सृजन-शक्ति का कारक मानते हैं।

C O 9. कल्पना की व्याख्या करते हुए कॉलरिज ने लिखा है कि स्पष्ट रूप से संसार में दो शक्तियाँ कार्य करती हैं जो एक दूसरे के सम्बन्ध में क्रियाशील और निष्क्रिय होती हैं और कार्य , बिना एक मध्यस्थ शक्ति के सम्भव नहीं है जो एक साथ सक्रिय भी है और निष्क्रिय भी। दर्शन भाषा में इस मध्यस्थ शक्ति को कल्पना की संज्ञा दी गई है।
CO 10. कल्पना के दो रूप हैं मुख्य और गौड़। वह प्रकृति का अंधानुकरण नहीं, पुन:सृजन है। कल्पना वह मानसिक शक्ति है जिसके द्वारा विभिन्न तत्वों का एकीकरण होता है। यह समन्वयकारी है।
CO. 11 आई ए रिचर्ड्स : काव्यमूल्य / संवेगों का संतुलन / व्यावहारिक आलोचना
CO. 8 मैथ्यू अर्नाल्ड : कला और नैतिकता / आलोचना का प्रकार्य : वह संस्कृति को आलोचना से अभिन्न मानते हैं। उसमें एक उद्देश्य मूलक जिज्ञासा रहती है।

CO .12. मैथ्यू अर्नाल्ड के अनुसार साहित्य को सद्गुणों का विकास करने वाला और सामाजिक विकृतियों को दूर कर उसे पूर्णता की ओर अग्रसर करने वाला होना चाहिए। वह त्रासदी के चित्रण मात्र से संतुष्ट नहीं बल्कि उसके प्रतिकार की ज़रूरत पर बल देते हैं।

CO 13. कविता में उदात्त से परिचय, जीवनोपयोगिता का दृष्टिकोण माँगते हुए कहते हैं कविता एकदिन धर्म का स्थान ग्रहण करेगी।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D.N. Tiwari)

CO. 14 टी एस इलियट : परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा / निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत / वस्तुनिष्ठ समीकरण। निजीकाव्य कर्मशाला / कारयित्री और भावयित्रि प्रतिभा / अभिजात्य और स्वच्छंदतावाद तथा अवैयक्तिक और वैयक्तिक का द्वंद्व / परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा। भद्रता / ज्ञान / दर्शन / कला। काव्य व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं व्यक्तित्व से मुक्ति / काव्य का संगीत / मूर्तविधान / संवेदनशीलता का असाहचर्य

CO. 15 स्वच्छंदतावाद :अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध तथा उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में स्वच्छंदतावाद ने ज़ोर पकड़ा और वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शेली तथा कीट्स जैसे कवियों ने स्वच्छंदतावादी काव्य के ज़रिये स्वछंदतावाद नियामक समीक्षा सिद्धांत की प्रस्थापना दी। इसके तहत काव्य में कवि-कल्पना को महत्त्व प्रदान किया गया। आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति पर अधिक बल तथा काव्य के भाव पक्ष को केंद्र में रखा गया। काव्य का उद्देश्य स्वांतःसुखाय तथा आनंद मानते हुए स्वच्छंदतावादी काव्य में प्रेरणा, प्रतिभा तथा कल्पना को प्रमुखता मिली। प्रकृति की बंधनरहितता और आवेगमयता इस साहित्यांदोलन की विशेषता थी

CO 16 मनोविश्लेषणवाद : फ्रायड इसके प्रस्तोता हैं :मनोविश्लेषणात्मक आलोचना का केंद्र फ्रायड की यह धारणा है कि हमारे मामले में सभी कलाकार, लेखक या लेखक रचनाप्रक्रिया में दमित इच्छा व्यक्त करने या इन इच्छाओं या भावनाओं का दमन जारी रखने के बीच की लड़ाई। इस संघर्ष को आलोचक उद्घाटित करते हैं।

CO 17 मनोविश्लेषणात्मक साहित्यिक अस्तित्ववाद 19वीं शताब्दी के बाद से कई दार्शनिकों के काम पर लागू होने वाला शब्द है, जो अपने पदों में बड़े अंतर के बावजूद, आम तौर पर मानव अस्तित्व की स्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और एक व्यक्ति की भावनाओं, कार्यों, जिम्मेदारियों और विचारों, या अर्थ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। या जीवन का उद्देश्य। वस्तुनिष्ठ ज्ञान, भाषा, या विज्ञान का विश्लेषण करने के विरोध में अस्तित्ववादी दार्शनिकों ने अक्सर इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित किया कि व्यक्तिपरक क्या है, जैसे कि विश्वास और धर्म, या मानव राज्य, भावनाएं, और भावनाएं, जैसे कि स्वतंत्रता, दर्द, अपराधबोध और अफसोस।

CO 18 आलोचना स्वयं मनोविश्लेषण के समान है, फ्रायड की द इंटरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम्स और अन्य कार्यों में चर्चा की गई विश्लेषणात्मक व्याख्यात्मक प्रक्रिया का बारीकी से अनुसरण करती है। आलोचक काल्पनिक पात्रों को मनोवैज्ञानिक केस स्टडी के रूप में देख सकते हैं , इस तरह की फ्रायडियन अवधारणाओं को ओडिपस कॉम्प्लेक्स , फ्रायडियन स्लिप्स , इड, अहंकार और सुपर ईगो , और इसी तरह की पहचान करने का प्रयास करते हैं, और प्रदर्शित करते हैं कि वे काल्पनिक पात्रों के विचारों और व्यवहारों को कैसे प्रभावित करते हैं। फ्रांसीसी मनोविश्लेषक जैक्स लैकन की टिप्पणी से प्रेरित एक व्याख्या कि "अचेतन एक भाषा की तरह संरचित है"

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 19 अस्तित्ववाद : सार्त्र कहते हैं कि मनुष्य स्वतंत्र होने के लिए अभिशप्त है । अस्तित्ववाद (एग्जिस्टेंशलिज्म / existentialism) अस्तित्ववाद मानव केंद्रित दृष्टिकोण है अर्थात् वह सम्पूर्ण जगत में मानव को सबसे अधिक प्रदान करता हैं उसकी दृष्टि में मानव एकमात्र साध्य है । प्रकृति के शेष उपादान "वस्तु" है
मानव का महत्व उसकी "आत्मनिष्ठता" मे हैं न कि उसकी "वस्तुनिष्ठता" में। विज्ञान,तकनीक के विकास और बुद्धिवादी दार्शनिकों ने मानव को एक "वस्तु" बना दिया है जबकि मानव की पहचान उसके अनूठे व्यक्तित्व के आधार पर होनी चाहिए ।

CO 20 सार्त्र के अनुसार मनुष्य स्वतंत्र प्राणी हैं। यदि ईश्वर का अस्तित्व होता तो वह संभवतः मनुष्य को अपनी योजना के अनुसार बनाता। किंतु सार्त्र का दावा है कि ईश्वर नहीं है अतः मनुष्य स्वतंत्र है
CO स्वतंत्रता का अर्थ है- चयन की स्वतंत्रता। मनुष्य के सामने विभिन्न स्थितियों में कई विकल्प उपस्थित होते हैं। स्वतंत्र व्यक्ति वह है जो उपयुक्त विकल्प का चयन अपनी अंतरात्मा के अनुसार करता है, न कि किसी बाहरी दबाव में। कीर्केगार्द ने कहा भी है कि 'महान से महान व्यक्ति की महानता भी संदिग्ध रह जाती है, यदि वह अपने निर्णय को अपनी अंतरात्मा के सामने स्पष्ट नहीं कर लेता'।
CO 21 अस्तित्ववादी विचार या प्रत्यय की अपेक्षा व्यक्ति के अस्तित्व को अधिक महत्त्व देते हैं। इनके अनुसार सारे विचार या सिद्धांत व्यक्ति की चिंतना के ही परिणाम हैं। पहले चिंतन करने वाला मानव या व्यक्ति अस्तित्व में आया, अतः व्यक्ति अस्तित्व ही प्रमुख है, जबकि विचार या सिद्धांत गौण। उनके विचार से हर व्यक्ति को अपना सिद्धांत स्वयं खोजना या बनाना चाहिए, दूसरों के द्वारा प्रतिपादित या निर्मित सिद्धांतों को स्वीकार करना उसके लिए आवश्यक नहीं। इसी दृष्टिकोण के कारण इनके लिए सभी परंपरागत, सामाजिक, नैतिक, शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक सिद्धांत अमान्य या अव्यावहारिक सिद्ध हो जाते हैं। उनका मानना है कि यदि हम दुख एवं मृत्यु की अनिवार्यता को स्वीकार कर लें तो भय कहाँ रह जाता है।
CO 22 अस्तित्वादी के अनुसार दुख और अवसाद को जीवन के अनिवार्य एवं काम्य तत्त्वों के रूप में स्वीकार करना चाहिए। परिस्थितियों को स्वीकार करना या न करना व्यक्ति की ही इच्छा पर निर्भर है। इनके अनुसार व्यक्ति को अपनी स्थिति का बोध दुःख या त्रास की स्थिति में ही होता है, अतः उस स्थिति का स्वागत करने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। दास्ताएवस्की ने कहा था- ''यदि ईश्वर के अस्तित्व को मिटा दें तो फिर सब कुछ (करना) संभव है।' '
CO 23 संरचनावाद/ उत्तरसंचनावाद :
हर्मेन्युटिक्स/ व्याख्या --- क्या है ?, कौन है ? / अर्थगत --- चरित्रों के उद्दिष्ट अर्थ से संबद्ध / प्रतीकात्मक ---- अर्थ के दो ध्रुवों के अंतर को सामने लाता है । इससे विपर्यस्त मनोवैज्ञानिक संबंधों के नमूने सामने आते हैं / क्रियात्मक --- कर्म और अभिवृत्तियों के तर्क को प्रकट करता है/ सांस्कृतिक ---- एक कृति में जानकारी के सभी संदर्भों को समेट लेता है : मसलन शारीरिक, साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक आदि..। संरचनात्मकता, समाज और दुनिया को बड़े पैमाने पर समझने के सैद्धांतिक दृष्टिकोण के रूप में, 1960 के दशक में फ्रांस में शुरू हुई। यह क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस था जिसने संरचनावाद का नेतृत्व किया। इसे एक दृष्टिकोण के रूप में समझा जा सकता है जो हाइलाइट करता है एक संरचना का अस्तित्व घटना में। विभिन्न घटनाओं में संरचना के अस्तित्व को उजागर करने के लिए सॉसर जैसे संरचनावादियों ने भाषा का उपयोग किया। उनके अनुसार, एक भाषा मनमाने तत्वों से बनी होती है। इन तत्वों का कोई व्यक्तिगत अर्थ

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

नहीं है। यह प्रणाली के माध्यम से है कि ये तत्व अर्थ प्राप्त करते हैं। इसके माध्यम से संरचनावाद ने इस अवधारणा को सामने लाया कि कोई छिपी हुई वास्तविकता नहीं थी, लेकिन वास्तविकता को संरचना के परिसर के भीतर पहचाना जाना था। बाइनरी विरोध संरचनावाद के सिद्धांतों में से एक था। उत्तर-संरचनावाद को एक के रूप में समझा जा सकता है संरचनावाद की आलोचना।

CO 24 संरचनावाद को पोस्ट-स्ट्रक्चरलवादियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। उनका मानना था कि किसी चीज़ को समझने के लिए, केवल विषय ही नहीं, बल्कि ज्ञान की प्रणाली का भी अध्ययन करना आवश्यक था, क्योंकि इसकी गलत व्याख्या की जा सकती है। इसके लिए नींव फर्डिनेंड डी सॉसेर, क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस और जैक्स पेरिडा के विचारों द्वारा रखी गई थी। उत्तर-संरचनावाद को ऐतिहासिक माना जाता है जबकि संरचनावाद को वर्णनात्मक माना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पोस्ट-स्ट्रक्चरलिज़्म अवधारणाओं को समझने के लिए इतिहास के विश्लेषण में संलग्न है। उदाहरण के लिए, अतीत में अवधारणाओं की व्याख्या वर्तमान से बहुत भिन्न हो सकती है। पोस्ट-स्ट्रक्चरलिस्ट इन परिवर्तनों पर ध्यान देते हैं।

(D. N. Tiwari)

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

हिंदी व्याकरण

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

Course Outcome

(स्नातक स्तर)

Course Outcome // B A vi Semester

भाषा का जन्म हालांकि व्याकरण के विधिवत निर्माण से पहले होता है । तदनंतर व्याकरणाचार्य भाषा में स्वाभाविक रूप से अंतर्निहित नियमों से ही व्याकरण का निर्माण करते चलते हैं । और आगे चलकर ये नियम स्पष्टता लेते हैं और व्याकरण के सुविकसित ढाँचे पर एक भाषा विकसित होती चलती है ।

CO 1 व्याकरण का अनुशासन भाषा के साथ ही जीवन को भी अनुशासित करता है । और समस्त ज्ञानानुशासनों को अराजक और मनमानी व्याख्या से बचाता है ।

CO 2. व्याकरण द्वारा शब्द संरचना एवं वाक्य विन्यास की जानकारी प्राप्त होती है।
किसी गूढ़ वाक्य के अर्थ सुनिश्चयन में सहायता मिलती है ।

CO 3. व्याकरण भाषा के मानक स्वरूप की रक्षा करके उचित प्रयोग की प्रक्रिया की जानकारी देने में समर्थ हैं।

CO 4. व्याकरण के द्वारा विद्यार्थियों में आलोचना प्रवृत्ति विकसित होती है। शब्द की शक्ति का हम अनुसंधान कर पाते हैं और व्याकरण से भाषा के मौलिक अर्थ खुलते हैं ।

CO 5. व्याकरण के द्वारा भाषा में शुद्धता आती है । शुद्ध उच्चारण शुद्ध लेखन एवं सही पढ़ने की प्रेरणा देना। तथा भाषा में अर्थ की अनिश्चितता को दूर करता है ।

CO 6 विद्यार्थियों को विविध ध्वनियों का ज्ञान देना।

CO 7. व्याकरण के द्वारा विद्यार्थियों में रचना एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।

CO 8. विद्यार्थियों में ऐसी क्षमता पैदा करना जिससे कि वे कम से कम शब्दों में शुद्धतापूर्वक अपने भावों को व्यक्त कर सकें। साथ ही उनमें ऐसी योग्यता पैदा करना जिससे वे भाषा की अशुद्धता को भी समझ सकें एवं उनमें भाषा को परखने की शक्ति का विकास हो सके।

C O 9. विद्यार्थियों में ऐसी योग्यता पैदा करना जिससे कि वे भाषा की अशुद्धता को समझ सकें एवं उनमें भाषा को परखने की शक्ति विकसित हो सके। साथ ही शब्दगत अशुद्धि के निराकरण की समझ देता है ।

CO 10. व्याकरण की शिक्षा का उद्देश्य भाषा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने और बरतने में प्रवीण बनाना होना चाहिए।

10. भाषा का शुद्ध रूप पहचानने में सक्षम तथा समर्थ होना ही व्याकरण का उद्देश्य है। इस तरह व्याकरण से शुद्ध बोलना और लिखना आ जाता है।

CO11 भाषा से संबंधित व्याकरण के नियमों का ज्ञान, मौलिक वाक्य बनाने की योग्यता पैदा करता है। और किसी पाठ / विषयवस्तु के अर्थ-उद्भवन और व्याख्या को निर्दोष बनाता है ।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 12 ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हमारी पहुँच भाषा के ज़रिए ही होती है। अत: किसी विषय को ठीक से समझना और उसे सही तरीके से अभिव्यक्त करना व्याकरण की जानकारी से ही संभव है।

राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने के लिए भाषा के नियमों के मानकीकरण और उसके स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान अपरिहार्य है।

CO13 विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भाषा और व्याकरण के ज्ञान को अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाता है।

धीरेन्द्र नाथ तिवारी विभाग - प्रभारी हिंदी

(D. N. Tiw

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

उपन्यास एवम् कथा साहित्य

एम ए सेमेस्टर 2 : प्रश्न पत्र 7

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

Course outcome

(स्नातकोत्तर स्तर)

CO 1 उपन्यास का आविर्भाव : लोकतंत्र और उपन्यास

CO 2.यह अपेक्षाकृत विस्तृत रचना होती हैं। इसमें जीवन के विविध पक्षों का समावेश होता हैं। उपन्यास में वास्तविकता तथा कल्पना का कलात्मक मिश्रण होता हैं। तथा कार्य-कारण श्रंखला का निर्वाह किया जाता हैं। उपन्यास में मानव-जीवन के सत्य का उद्घाटन होता हैं। जीवन की समग्रता का चित्र इस प्रकार उपस्थित किया जाता है कि पाठक उसकी अन्तर्वस्तु तथा पात्रों से अपना तादात्मीकरण कर सके।

CO. 3 गोदान : प्रेमचंद : गोदान का अध्ययन हमें भारतीय समाज की बहुस्तरीय समस्याओं को समझने और उन्हें दूर करने को अग्रसर करता है ।

CO 4 गोदान उपन्यास में जमींदारी और महाजनी सभ्यता में पिस रहे भारतीय कृषक की त्रासदी / कृषकों के विसंगतिपूर्ण जीवन के यथार्थ और शोषण के दुष्चक्र का उद्घाटन / किसान से मजदूर बनने की व्यथा का यथार्थ के धरातल पर मार्मिक चित्रण है ।

CO 5 प्रेमचंद साहित्य को मनोरंजन की वस्तु नहीं मानते बल्कि उसमें स्वाधीनता के भाव, सौंदर्य के सार को उपस्थित करने के हिमायती हैं । जो हममें गति, संघर्ष की चेतना और बेचैनी पैदा करे । जनमानस में नवीन चेतना का संचार करे।

CO 6 गोदान में स्वच्छंद प्रेम और अंतर्जातीय विवाह की समस्या / अछूत समस्या / ऋण की समस्या / किसान - जमींदार और किसान - महाजन के द्वंद्व / मिल-मजदूरों की समस्या को सूक्ष्मता से उद्घाटित करके एक समतामूलक और शोषण मुक्त समाज के निर्माण हेतु दिशासंकेत है ।

CO. 7 मैला आँचल : फणीश्वरनाथ रेणु :यह एक यथार्थवादी समस्यामूलक उपन्यास है । आंचलिक कुरूपता के साथ अंचल के सौंदर्य का उद्घाटन रेणु जी ने किया है ।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 8. मैलाआंचल में स्वातंत्र्योत्तर भारत में जातिवाद, अफसरशाही, अवसरवादी राजनीति, मठों आश्रमों का पाखंड, पदलोलुपता, स्वार्थपारायणता तथा भ्रष्टाचार का उद्घाटन है ।

CO 9. इस उपन्यास में 'नायक' कोई नहीं है बल्कि एक पूरा जीवन्त अंचल और सृजनशील समाज ही इसका नायक है ।भूख बेबसी गरीबी हालत में सांस लेता सामंती जकड़न में जकड़ा मेरीगंज गांव जिन समस्याओं से रूबरू है वे ... भूमि संबंधी समस्या, जमीदारी और जाति भेद की समस्या, यौन समस्या सांस्कृतिक उत्थान की समस्या अंधविश्वासों और धार्मिक संस्थानों की समस्याएँ हैं । डॉ प्रशांत इन बीमारियों का इलाज खोजने आते हैं ।

CO 10. इस उपन्यास की भाषा, बातचीत की शैली और मुहावरे ठेठ अंचल से लिए गए हैं ।आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्तर की जटिल समस्याओं से जूझते हुए लेखक ने देश के एक पिछड़े अंचल को समझने और राजनीतिक सामाजिक आर्थिक चेतना से युक्त होकर कोई बदलाव लाने के लिए लोगों का ध्यान आकर्षित किया है । आमतौर पर यह सब समस्त भारतीय देहात की ही समस्याएँ हैं । इस अर्थ में यह उपन्यास अपने उद्देश्य के स्तर पर आंचलिकता के दायरे का अतिक्रमण करता है । और साहित्य सृजन के व्यापक अर्थों को उद्घाटित करता है ।

CO. 11 शेखर एक जीवनी : अज्ञेय : यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । कह सकते हैं कि 'समाज से व्यक्ति की ओर मुड़ने' की दिशा है ।

CO 12. 'विद्रोह' शेखर की 'अस्मिता का कवच' है । सामाजिक नैतिकता / विवाह प्रथा / पुरानी मान्यताओं और सामाजिक रूढ़ियों के प्रति और परिवार के नियम सबके प्रति खुला विद्रोह शेखर के स्वतंत्रताकामी व्यक्तित्व में अंतर्निहित है ।

CO 13 शेखर : एक जीवनी में स्नेह की अनुभूति का सूक्ष्म चित्रण / गूढ़तम प्रवृत्तियों का सूक्ष्म और कलात्मक उद्घाटन / अहं की प्रबलता वाले कामभावना से परिचालित व्यक्तित्व का निरूपण है ।

CO. 14. शेखर जिस तरह समाज के नियमों से बंधनरहितता की छूट चाहता है । इस अर्थ में यह रोमैंटिसिज़्म के आशयों से भरा हुआ उपन्यास है । इसका नायक स्वतंत्रता कामी है और नारि-पुरुष से जुड़ी कामवर्जनाओं से अलग कोई राह चुनना चाहता है ।

CO. 15 शेखर मृत्यु, अहिंसा, स्वतंत्रता और प्रेम के शाश्वत प्रश्नों पर विचार करता है । वह किंचित पलायनवादी और यथार्थ के दबाव से नियतिवादी होता हुआ दिखाई देता है । यह उपन्यास एक व्यक्ति के युगसंघर्ष का आधुनिक आख्यान बन जाता है ।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO. 16 'उसने कहा था' : कहानी : चन्द्र धर शर्मा गुलेरी : त्याग और जीवनोत्सर्ग के ज़रिए प्रेम के उत्कर्ष और प्रतिष्ठा का संदेश । प्रेम की निश्छलता और कर्तव्यपरायणता का उद्घाटन ।

CO. 17 'आकाश दीप' : जयशंकर प्रसाद : देशप्रेम और वैयक्तिक प्रेम का द्वंद्व और प्रेम के आदर्शवादी रूप का चित्रण

CO. 18 'दोपहर का भोजन' : अमरकांत : एक भारतीय माँ का दरिद्रता और अभाव में भी आपसी सामन्जस्य बनाए रखने और परिवार को एकजुट रखने का मानवीय उपक्रम । साथ ही बदलाव के लिए आतुरता उत्पन्न करने वाले भारतीय यथार्थ का मार्मिक चित्रण

CO. 19 'पिता' : ज्ञानरंजन : पिता और पुत्र के लगाव / मानसिक अनैकट्य / और पीढ़ियों के द्वंद्व की कथा।

CO. 20 'जंगलजातकम' : काशीनाथ सिंह : विकास की विद्रूपता तथा मनुष्य और पर्यावरण के अंतर्संबंध की अंतर्कथा ।

CO. 21 'पालगोमरा का स्कूटर' : उदय प्रकाश : भूमण्डलीकरण, बाजारीकरण के दौर में मध्यवर्गीय भारतीय मनुष्य की त्रासदी।

(D.N. Tiwari)

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

हिंदी आलोचना

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

एम ए 4 सेमेस्टर : प्रश्न पत्र :

Course outcome

(स्नातकोत्तर स्तर)

CO 1 साहित्य सृजन का अर्थ क्या है ? और वह अर्थ कहाँ स्थित होता है ?
यह बताना आलोचना का पहला दायित्व है ।

C O 2 किसी कृति के मूल्यांकन की कसौटी इतिहास दृष्टि / विचारधारा / यथार्थवाद / सौंदर्याभिरुचि और आलोचना की सामाजिकता ही है ।

CO 3 आलोचनात्मक संघर्ष अंततः विचाधारात्मक संघर्ष में परिणत होते हैं । और सामाजिक साहित्यिक अंतर्विरोधों को सामने लाते है । इन द्वंद्वों से जूझते रहना -- साहित्य के उच्चतर सोपानों का पथ प्रशस्त करते हैं ।

CO 4 गंभीर आलोचना के अध्ययन से साहित्य, लोकतंत्र और समाज के अन्तर्सम्बन्धों की जानकारी मिलेगी । हिंदी की विविध साहित्यिक विधाओं और आलोचनाशास्त्र के उद्भव और विकास की विचारधारात्मक समझ विकसित हो सकेगी।

CO 5 हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी / रामचन्द्र शुक्ल/ हजारी प्रसाद द्विवेदी / नंददुलारे वाजपेई / रामविलास शर्मा / नामवर सिंह के वैचारिक दृष्टिकोण और उनके योगदान का मूल्यांकन करते हुए साहित्य की विविध विधाओं के सामाजिक सांस्कृतिक पहलुओं की उनके नज़रिए से जानकारी उपलब्ध हो सकेगी ।

CO. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने तुलनात्मक और निर्णयात्मक समीक्षा के साथ ही अन्वेषण और अनुसंधानपरक आलोचना की नींव रखी

CO. 6 आचार्य शुक्ल ने वस्तुनिष्ठ विवेचन, सारग्राहिणी दृष्टि, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, नवीनता के समन्वय और लोकवादी दृष्टि के साथ ही पाश्चात्य एवं भारतीय काव्यशास्त्रों की मान्यताओं का गंभीर अध्ययन-विश्लेषण करके अपनी समन्वय बुद्धि द्वारा हिंदी के एक नए सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना-शास्त्र के निर्माण का कार्य किया ।

CO 7 आचार्य शुक्ल के वाद हिंदी में स्वच्छन्दतावादी, प्रभाववादी, मनोवैज्ञानिक या अन्तश्चेतनावादी, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक, शास्त्रीय या सैद्धांतिक आलोचना, अन्वेषण एवं अनुसंधानपरक आलोचना और प्रगतिवादी आलोचना का विकास हुआ।

CO 8 स्वचछंदतावादी/ सौष्ठव वादी आलोचक नंददुलारे वाजपेयी ने बताया कि छायावाद का अपना जीवन-दर्शन है, अपनी भाव सम्पत्ति है, वह द्विवेदीकालीन कविता की परिपाटीबद्धता, नीतिमत्ता और स्थूलतः के विरुद्ध नवोन्मेष अनुभूति-प्रवण कविता है। उसमें अनुभूति, दर्शन और शैली का अद्‌भुत सामःय है। वह राष्ट्रीय चेतना के स्वर से परिपूर्ण है, उसका भी अपना आध्यात्मिक पक्ष है।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) Collego, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 9 प्रगतिवादी आलोचना ने यथार्थ के समग्र द्वंद को साहित्य और आलोचना में उद्घाटित किया। उनके अनुसार मानव-चेतना का नियमन सामाजिक परिस्थितियाँ करती हैं और कला चेतना मानव चेतना का ही उदात्त रूप है, इसलिए प्रत्येक युग का कलाकार जाने-अनजाने उस वर्ग विशेष का ही प्रतिनिधत्व करता है जिसमें वह पला होता है। वर्गसंघर्ष और सामाजिक यथार्थ को आलोचना में केंद्रीयता मिली।

CO 10 अज्ञेय की विचारधारा पर टी. एस. इलिएट के 'निर्वैयक्तिक' सिद्धांत की गहरी छाप है। वे कविता को अहं के विलयन का साधन मानते हैं। 'अनुभव की अद्वितीयता', 'वरण की स्वतंत्रता', 'व्यक्ति स्वातंत्र्य', 'संप्रेषणीयता', 'स्वाधीन चेतना', 'परंपरा और आधुनिकता', 'सर्जनात्मक क्षमता', 'जिजीविषा', 'रचना की स्वायत्तता', 'प्रयोगशीलता', 'आत्माभिव्यक्ति', 'व्यक्तित्व की अद्वितीयता', आदि पर अज्ञेय ने गंभीरतापूर्वक विचार किया है और अपनी साहित्यिक समालोचना में इनको समाविष्ट किया है। इससे हिंदी को नए भावबोध को व्यक्त करने वाली नयी शब्दावली भी मिली है। अज्ञेय की समीक्षा-दृष्टि पर अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद और अंग्रेजी की नयी समीक्षा का प्रभाव है।

CO 11 प्रगतिवादी आलोचकों विशेषकर रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय और सबसे अधिक मुक्तिबोध ने अज्ञेय के वैयक्तिकता और प्रयोगवादी-कलावादी विचारों रचनात्मक प्रत्याख्यान कर के आलोचना को नई दिशा दी।

CO 12 मनोविश्लेषणवादी आलोचना ने साहित्य के निर्माण की चेतना का संबंध मनुष्य की काममूलक दमित भावनाओं से माना। ये भावनाएँ वैयक्तिक हैं इसलिए वे साहित्य का संबंध व्यक्ति की चेतना से अंतश्चेतना से मानते हैं।

CO 13 दलित आलोचना ने पिछली सभी आलोचना दृष्टियों से असहमति जताते हुए सामाजिक-न्याय के सवाल को केंद्रीय प्रश्न बनाया।

CO 14 आलोचकों के अतिरिक्त प्रसाद', 'पंत', 'निराला', 'अज्ञेय', मुक्तिबोध', 'विजयदेव नारायण साही', और 'शमशेर' जैसे रचनाकार आलोचक भी इस बात के उदाहरण हैं कि उनकी कविताएँ जितनी अच्छी हैं, उतनी ही अच्छी और संभावनापूर्ण उनकी समीक्षाएँ भी साबित हुईं हैं। मुक्तिबोध का आलोचना कर्म तो निस्संदेह प्रगतिशील आलोचना के पुनर्प्रत्ययन के दिशा संकेत वाला है।

CO 15 काव्य या साहित्य का अभिप्रेत क्या है --- इसे आलोचना की अलग अलग प्रणालियों ने अलग अलग तरह से देखा। एक उदाहरण के रूप में देखें तो रामचन्द्र शुक्ल आदि आलोचकों से अलग हटकर प्रगतिवादी आलोचना ने भक्ति काव्य के निर्गुण-सगुण द्वंद अथवा कामायनी / निराला के काव्य और प्रेमचंद के लेखन के मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन के ज़रिए बार बार आलोचना के सम्मुख नए वैचारिक प्रस्ताव रखे।

CO 16 स्वातंत्र्योतर हिंदी आलोचना में उत्तर औपनिवेशिक विचारों की शिनाख़्त होगी। और स्वाधीन भारत के सामाजिक यथार्थ से गुज़रते हुए हमें लोगों की जीवन स्थितियों उनकी प्रगति या अवनति की दशा और दिशा की जानकारी प्राप्त होगी।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala. Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 17 हिंदी में प्रचलित विभिन्न आलोचना पद्धतियों से अवगत हो सकेंगे। आलोचना के वैचारिक दार्शनिक वैभव से परिचित हो सकेंगे।

CO 18 आलोचना की समग्र व्यवस्था में व्यवस्था की विसंगतियों की समग्र आलोचना और सामाजिक जीवन के पुनर्निर्माण के द्वार खुलते हैं।

CO 19 आलोचनात्मक रुख विकल्पों की तलाश की ओर ले जाने वाले होते हैं।

CO. 20 रचना के गुण-दोष विवेचन से लेकर उसमें अंतर्निहित सौंदर्य और मूल्य के उद्घाटन तक की यात्रा करने वाली आलोचना की भी अनेक पद्धतियाँ हैं जैसे निर्णयात्मक आलोचना, तुलनात्मक आलोचना, ऐतिहासिक आलोचना, सैद्धांतिक आलोचना, व्यावहारिक आलोचना आदि। इसके अध्ययन से साहित्य की बहुतलस्पर्शी समझ कायम होगी।

CO. 21 आलोचना रचना की अनुवर्ती नहीं है बल्कि उसकी भी एक स्वतंत्र सत्ता है और रचना की तरह वह भी एक सृजन है। सामाजिक/ राजनीतिक जीवन के बदलाव के चलते हम यह भी देखते हैं कि आलोचना की अवधारणाओं में कब और कैसे नए मोड़ या परिवर्तन उपस्थित हुए हैं।

CO. 22 आलोचना का संबंध सिर्फ़ साहित्य से नहीं है बल्कि बौद्धिकता, तार्किकता और भौतिकवादी - मानवतावादी विश्वदृष्टिकोण विकसित करने में साहित्य की किसी और विधा से बढ़कर आलोचकीय कर्म का योगदान है।

(D. N. Tiwari)

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

अनुवाद : सिद्धांत एवम् प्रयोग
शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

Course outcome

(स्नातकोत्तर स्तर)

CO 1 विभिन्न प्रकार के अनुवाद और व्याख्या क्षेत्रों के सिद्धांतों और दृष्टिकोणों की समझ

CO 2 अनुवाद और व्याख्या : बौद्धिक जीवन के सामाजिक/ सांस्कृतिक, नैतिक और ज्ञानमीमांसात्मक पहलुओं के बारे में जागरूकता ।

CO 3 विविध विषयों के साहित्य के सांस्कृतिक / ज्ञानात्मक अभ्यास के रूप में भाषा के उपयोग की समझ

CO. 4 अनुवाद : क्षेत्र / सीमाएँ :
शब्दानुवाद / भावानुवाद / सारानुवाद / छायानुवाद / सृजनात्मक - साहित्यिक अनुवाद की विविध स्तरों पर माँग ।

CO. 5 आशु अनुवाद / दुभाषिया कर्म / कम्प्यूटर अनुवाद कंप्यूटर ज्ञान सहित : आजीविका का व्यापक क्षेत्र

CO. 6 अनुवाद के अन्य उपकरण : थिसारस / शब्दकोश / पारिभाषिक शब्दावली कोश : विविध विषयों में अनुवाद एवम् शोध की दिशाएँ । अनुवाद या दुभाषिये के रूप में उपयोग किए जाने वाले तकनीकी उपकरणों की समझ

CO. 7 : अनुवाद की समस्याएँ : समस्याएँ ही संभानाएँ हैं । साहित्यिक / वैज्ञानिक / वाणिज्यिक / पत्रकारिता / विधिक / प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद में अच्छी गति से आजीविका की अपार संभावनाएँ ।

CO. 8 : हिंदी भाषी क्षेत्र एक बड़ा बाज़ार क्षेत्र भी है ; अत: अनुवाद, आशुअनुवाद और दुभाषिया कर्म से आजीविका के बहुत से अवसर हैं साथ ही वस्तुओं तथा सेवाओं के विज्ञापन का कार्य भी हैं ।

C O 9 पेशेवर अनुवादक के लिए किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्तिगत / सामूहिक (कंपनी) परियोजना के निर्माण, प्रबंधन और उत्पादन में अनुवाद का कौशल मूल्यवान है

CO. 10 : अनुवाद के महत्व को समझना । नाना ज्ञानानुशासनों में उपलब्ध विश्व की अथाह ज्ञानसंपदा को हिंदी भाषा में ले आने का प्रयास । इसका आजीविका का गहरा संबंध ।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

हिंदी साहित्य का इतिहास : आरंभ से रीतिकाल तक

* शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला - देहरादून

हिंदी विभाग CO

Course Outcome

(स्नातकोत्तर स्तर)

CO 1 इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ ।

CO. 2 इतिहास लेखन की प्रविधि । कालविभाजन ।

CO. 3 आदिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

CO. 4 प्राकृत और अपभ्रंश काव्य : सिद्ध-नाथ-जैन काव्य ।

CO. 5 हिंदी के जातीय कवि : विद्यापति और मैथिली भाषा का उत्कर्ष ।

CO. 6 अमीरखुसरो का हिंदी फ़ारसी काव्य । हिंदवी / रेख़्ता / हिंदुस्तानी / खड़ीबोली हिंदी /उर्दू भाषा के उन्द्भव की जमीन ।

CO. 7 रासोकाव्य : इतिहास और कल्पना / प्रामाणिकता का प्रश्न / पृथ्वीराज रासो तथा वीर-श्रृंगार परक --- अन्य वीराख्यानकाव्य । वीरगाथाओं के कवियों का परिचय ।

CO. 8 मध्यकालीन बोध का स्वरूप

CO. 9 भक्तिकाल का उन्द्भव : ग्रियर्सन -- वाह्य प्रभाव -- ईसाइयत की देन / रामचन्द्र शुक्ल -- बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया -- क्या यह महान सांस्कृतिक आंदोलन किसी 'पौरुष से हताश जाति' का कर्म हो सकता है ?

CO 10 हजारी प्रसाद द्विवेदी -- भारतीय परंपरा का स्वतः स्फूर्त विकास । भक्ति द्राविड़ी ऊपजी... की अवधारणा । जयशंकर प्रसाद --- दार्शनिक अनात्मवाद और भक्तिवाद का अंतर्संबंध ।

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)

(D. N. Tiwari)

CO 11. निर्गुणपंथ / संतकाव्य : वेद और अवतारों के ईश्वर और कुरान के खुदा से न्यारे कबीर के राम / वर्णाश्रम विरोध / मूर्ति-भंजन / शास्त्र के अस्वीकार का साहस / ना हिंदू ना मुसलमाँ /उलटबाँसी - उलटबाँसी /

CO 11निर्गुण काव्य --- शास्त्रीय परंपरा से हटकर / समाजिक विषमता, पाखंड, ऊँच-नीच, छुआछूत से उत्पन्न विसंगतियों, विडंबनाओं और विरोधाभासों से काव्य की बुनावट / कबीर वाणी के डिक्टेटर ।

CO 12 सूफ़ीमत : चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, फ़िरदौसी, नक्शबंदी संप्रदाय । सूफ़ीकाव्य : सामंतवादी जकड़न का विरोध / कितेब का अस्वीकार / दीन-ए-इलाही /

C O 13. मलिक मुहम्मद जासयी : पद्मावत

महाकाव्य जायसी की काव्य-प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रतिनिधि है। इसमें चित्तौड़ के राजा रलसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा वर्णित है। कवि ने कथानक इतिहास से लिया है परन्तु प्रस्तुतीकरण सर्वथा काल्पनिक है। भाव और कला-पक्ष, दोनों ही दृष्टियों से यह एक उत्कृष्ट रचना है। पद्मावत इनका ख्याति का स्थायी स्तम्भ है। 'पद्मावत' मसनवी शैली में रचित एक प्रबंध काव्य है। यह महाकाव्य 57 खंडो में लिखा है। जायसी ने दोनों का मिश्रण किया है। पद्मावत की भाषा अवधी है। चौपाई नामक छंद का प्रयोग इसमे मिलता है। इनकी प्रबंध कुशलता कमाल की है। जायसी के महत्त्व के सम्बन्ध में बाबू गुलाबराय लिखते है:- जायसी महान् कवि है ,उनमें कवि के समस्त सहज गुण विद्यान है। उन्होंने सामयिक समस्या के लिए प्रेम की पीर की देन दी। उस पीर को उन्होंने शक्तिशाली महाकाव्य के द्वारा उपस्थित किया । वे अमर कवि है।

C O 14 सगुणभक्ति काव्यधारा : वैष्णव, ब्रह्म, श्री, रुद्रादि प्रमुख संप्रदाय / दार्शनिक विचार पांचरात्र / आलवार / कृष्णभक्ति काव्य / पुष्टि मार्ग / अष्टछाप / सगुण-निर्गुण द्वंद्व / रामभक्ति काव्य । तुलसीदास का समन्वयवाद और मर्यादावाद । कहा जा सकता है कि तुलसीदास अपने युग के प्रति अत्यन्त सचेत थे। उन्होंने वही लिखा जिसे उन्हांने अनुभूत किया और जो सोलह आने सत्य भी था। भक्ति-भावना, समन्वयत्मकता, भ्रातृत्व, विपय की व्यापकता, तत्कालीन समाज का चित्रण, युगवोध आदि विप यों पर साहित्य निर्माण किया। उन्हें सदैव स्मरण

CO 15 रीति और श्रृंगार काव्य : सामंती परिवेश/ दरवार लोक और काव्य का रीतिशास्त्र । रीतिआचार्य कवि । रीतिवद्ध / रीतिसिद्ध / रीतिमुक्त काव्यधारा

D.N. Tiwari

Dr. Preetpal Singh
Co-ordinator, NAAC
S.D.M. Govt. P.G. College,
Doiwala, Dehradun.

(Dr. D. C. Nainwal)
Principal
S.D.M. Govt. (PG) College, Doiwala,
Dehradun (Uttarakhand)